मददगार बिल्ली

जापानी लोक कथा

कोको निशिज़ुका, चित्र : रोसैन

बहुत समय पहले समुद्र के किनारे एक गाँव में, मिट्टी से ढकी एक सफेद बिल्ली योहेई को अपने दरवाजे पर दिखाई दी. योहेई बहुत गरीब था, लेकिन उसने उस लावारिस बिल्ली का स्वागत किया और बिल्ली के गायब होने से पहले उसके साथ अपना रात का खाना साझा किया. बाद में, जब योहेई के पिता बीमार हुए तो लड़का बहुत हताश हुआ—अगर वो अपने पिता की देखभाल के लिए घर पर ही रहता तो वो कमाई कैसे कर पाता? लेकिन फिर उस छोटी सफेद बिल्ली को योहेई की उदारता की याद आई और फिर वो अपने पंजे को हिलाते हुए हर बार कुछ मदद लेकर वापिस लौटी.
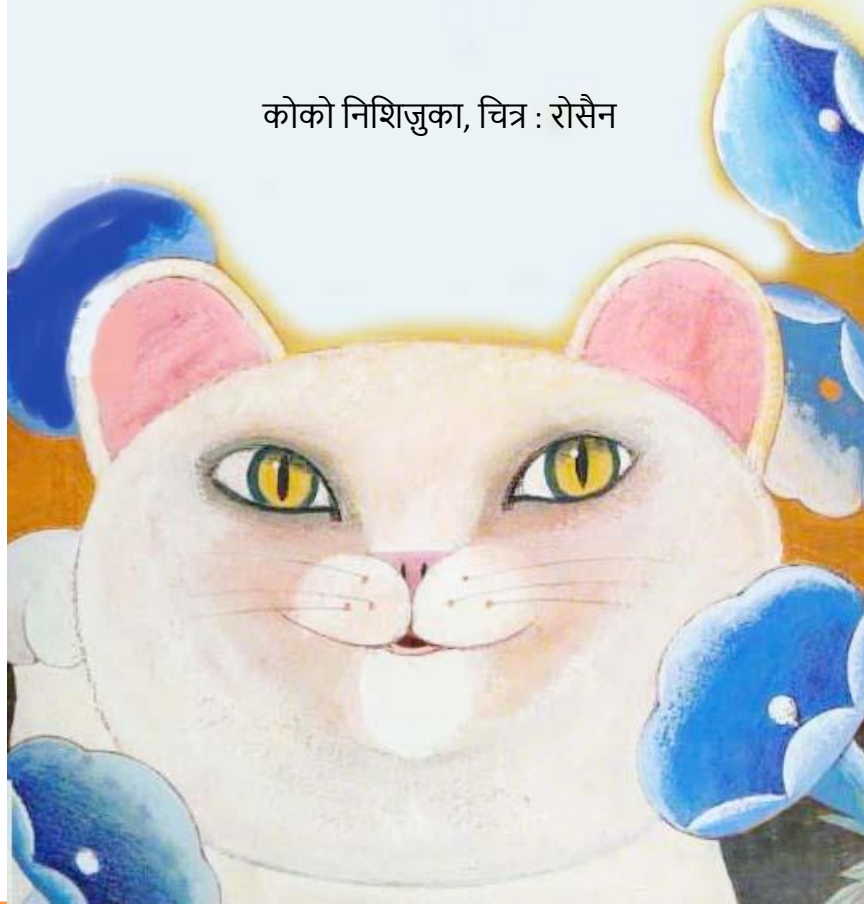
मददगार बिल्ली

जापानी लोक कथा
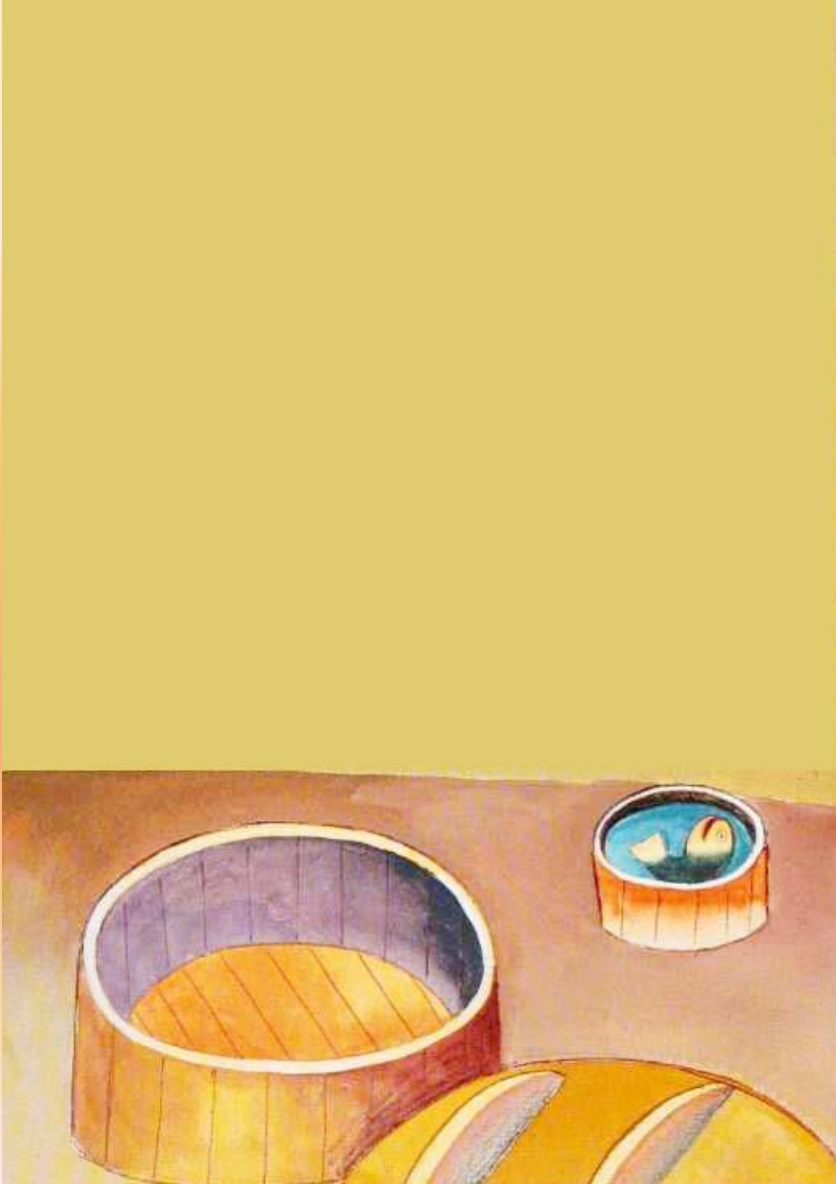
बहुत समय पहले योहेई नाम का एक छोटा लड़का अपने पिता के साथ समुद्र के किनारे एक गाँव में रहता था. हर सुबह, जब सूरज समुद्र के ऊपर से झाँकता, तो वह उठकर मछली खरीदने के लिए बंदरगाह पर जाता था. फिर वो उन मछलियों को घर-घर जाकर बेचता था. उन्हें अपने कंधे पर संतुलित एक बांस को संतुलित करता था जिसके दोनों छोरों पर ड्रमों में मछलियां रखी होती थीं. योहेई बहुत कड़ी मेहनत करता था लेकिन फिर भी वो गरीब था.

लेकिन जब उसके पिता बीमार हुए तो योहेई ने दवायें खरीदने के पैसों के लिए और भी अधिक मेहनत की. लेकिन एक बार में वो केवल दो ड्रम मछली ही ले जा सकता था. उसे अफ़सोस था क्योंकि वो ज़्यादा मछलियां नहीं बेंच पाता था.

एक बरसात की शाम, जब योहेई घर में चावल पका रहा था, उसे अपने दरवाजे पर कुछ आवाज सुनाई दी. जब उसने दरवाज़ा खोला तो उसने एक बिल्ली को बाहर बारिश में कांपते हुए देखा. उसका सफेद फर कीचड़ से लथपथ था. बिल्ली ने म्याऊ कहा, जैसे वो अंदर आने के लिए अनुमति मांग रही हो.
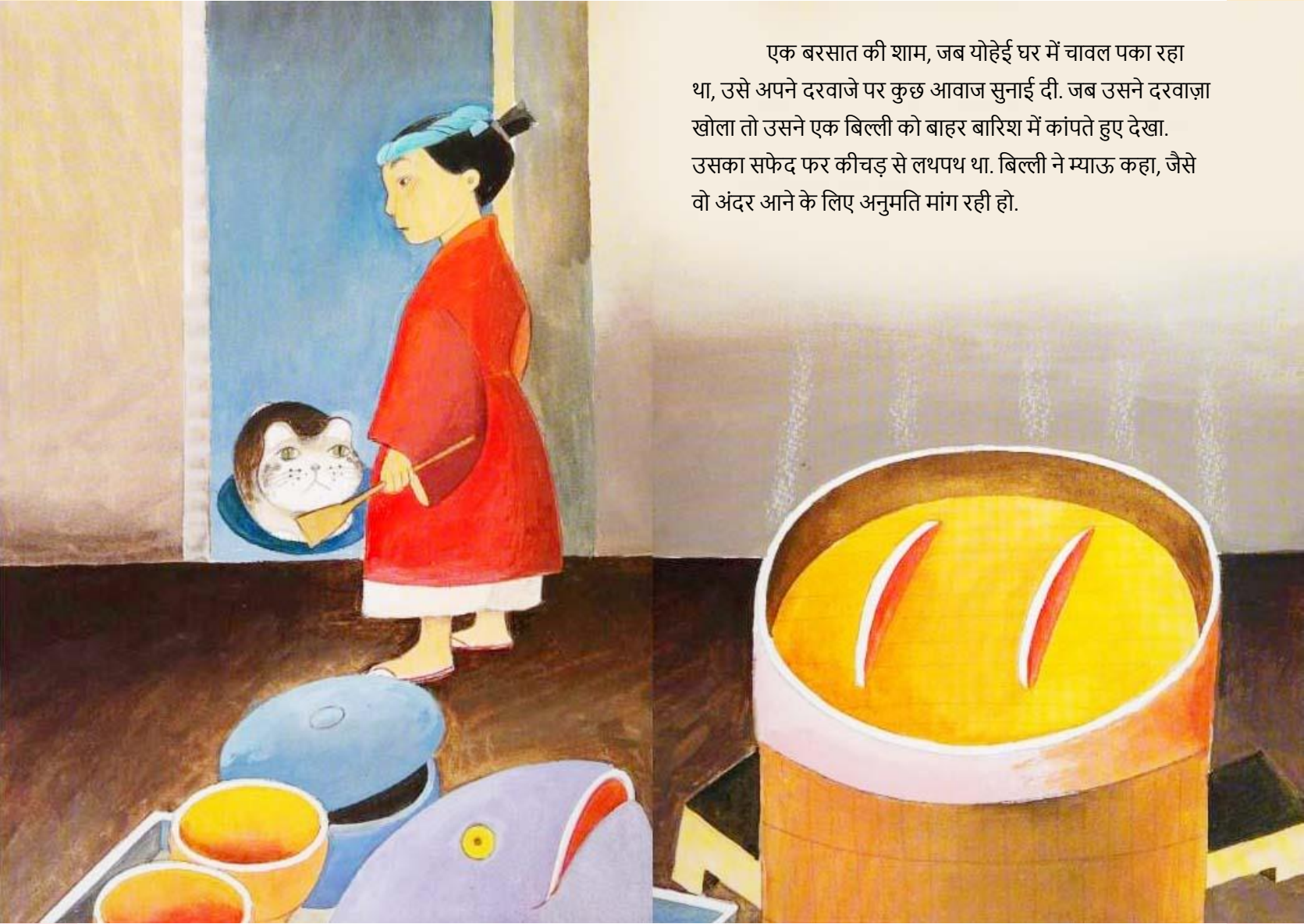
"एक गरीब लावारिस बिल्ली!" योहेई ने उसे अंदर आने दिया. उसने बिल्ली को एक तौलिए से सुखाया. अपने पिता को रात का खाना खिलाने के बाद योहेई ने अपनी छोटी प्लेट का बहुत का चावल और आधी मछली बिल्ली को खिलाई.

खाना समाप्त करने के बाद बिल्ली योहेई की गोद में कूदकर बैठ गई और उसे अपने नरम सफेद फर से रगड़ने लगी. योहेई का पेट भूख से तड़प रहा था, लेकिन बिल्ली की आवाज़ ने उसे खुश कर दिया. अगले दिन सुबह, बिल्ली चली गई.

तीन दिन बाद, जब योहेई गाँव में मछली बेच रहा था, तो उसका पड़ोसी मासा उसके पास दौड़ता हुआ आया. "योहेई जल्दी घर चलो, तुम्हारे पिता को बहुत तेज बुखार है!"
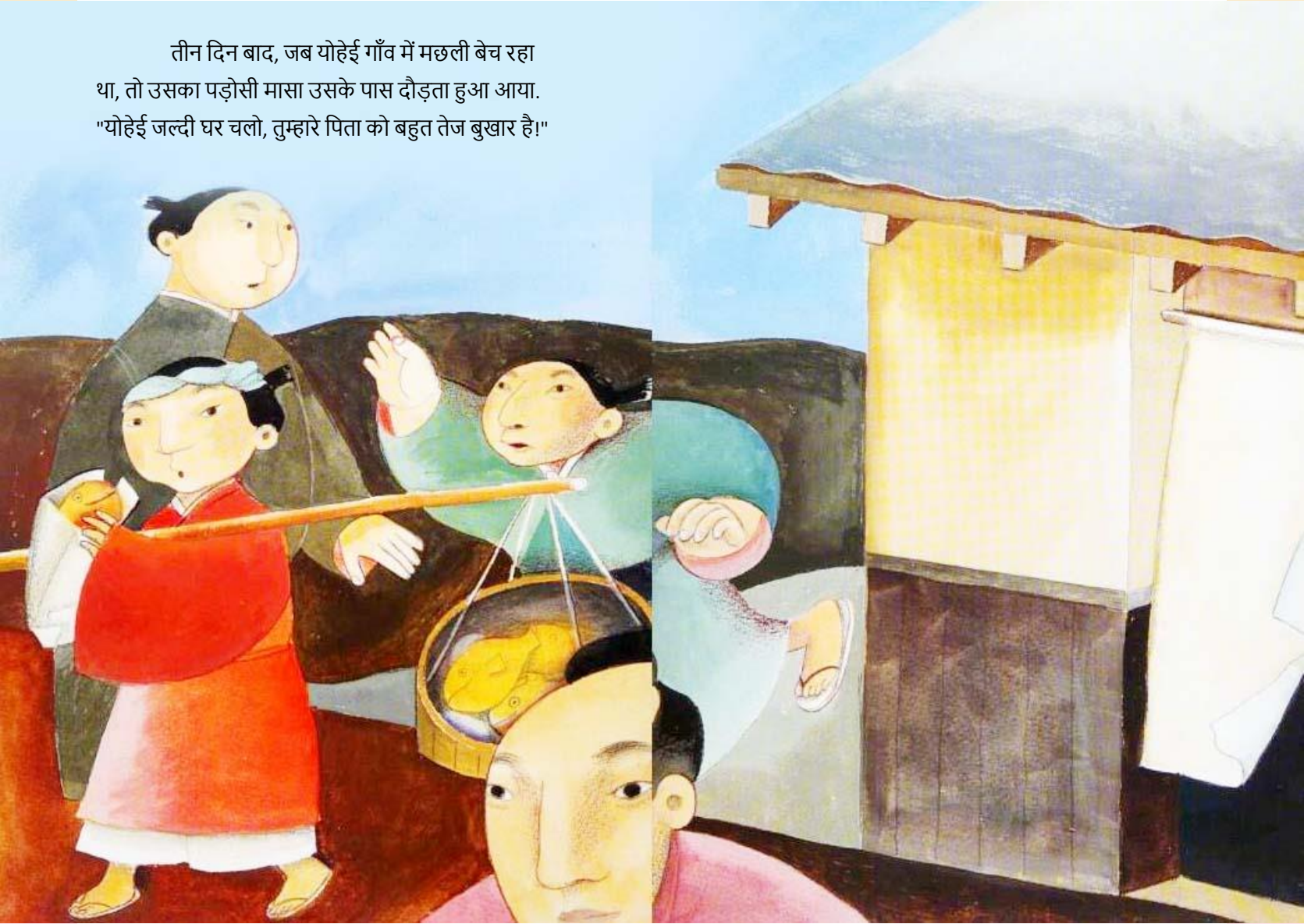
योहेई ताज़ी मछलियों से भरे भारी ड्रमों को उठाकर तुरंत घर की ओर दौड़ा. जब वो घर पहुंचा तो बिल्ली दरवाजे के पास ही खड़ी थी. परन्तु योहेई अपने पिता के पास गया. उसने अपने पिता के माथे पर एक ठंडा गीला कपड़ा रखा. एक बार जब उसके पिता को कुछ ठीक लगा तो योहेई ने मछलियों की ओर देखा और फिर एक आह भरी. "मैं क्या करूँ? मैं आज मछलियां बेचने के लिए बाहर नहीं जा सकूंगा, और फिर कल तक मछलियां खराब हो जाएँगी."
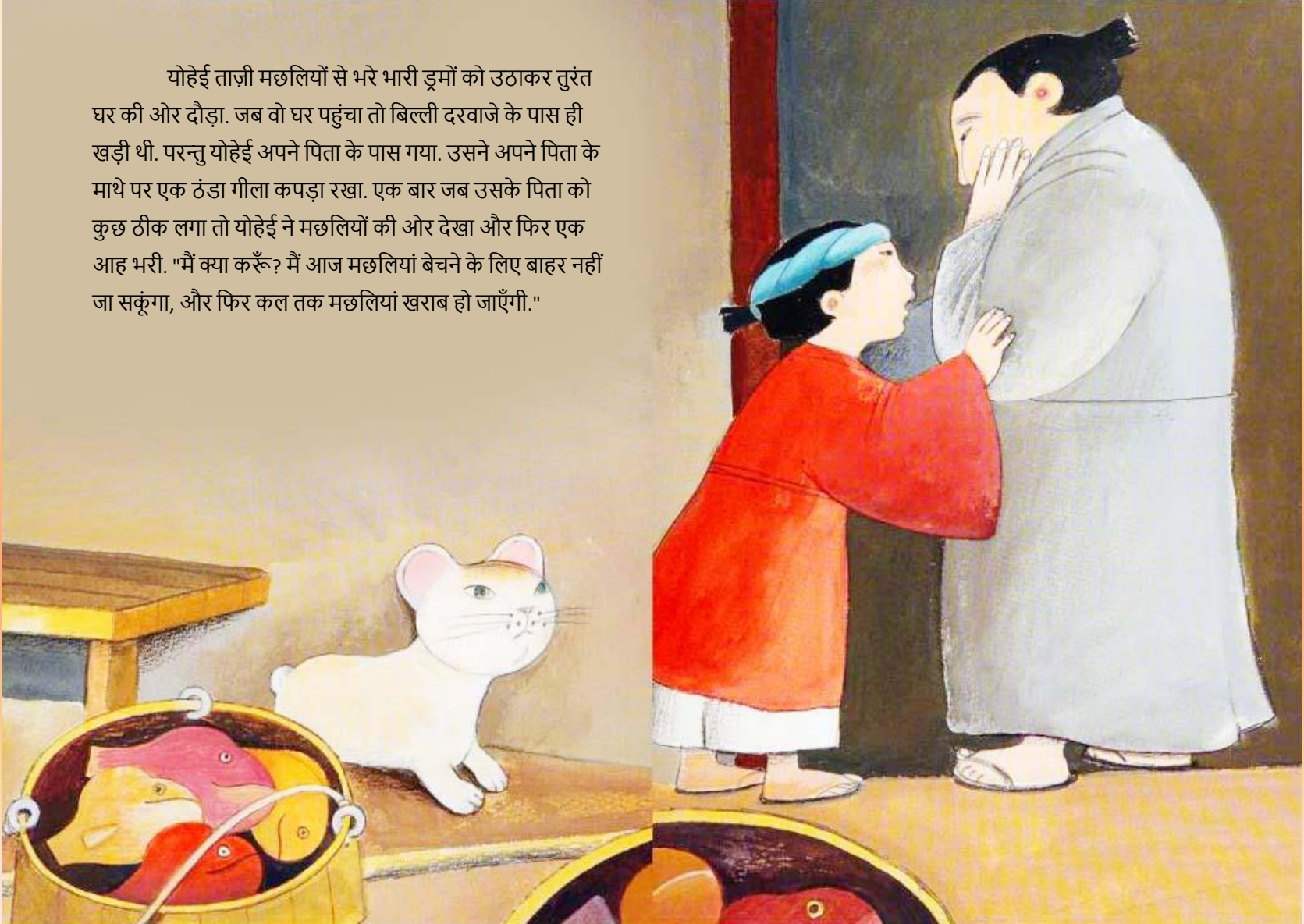
अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई. जब योहेई ने दरवाज़ा खोला, तो रंगीन रेशमी किमोनो पहने एक युवती उसके सामने खड़ी थी.

"हैलो, मैं कैसे आपकी मदद कर सकता हूं?" योही ने आश्चर्य से पूछा.

"क्या आप मछुआरे हैं?" उसने लकड़ी के ड्रमों में मछलियों की ओर इशारा करते हुए पूछा. "कितनी अजीब बात है, कि बिल्ली एक ग्राहक को मछुआरे के पास लेकर आए!" फिर युवती किमोनो की आस्तीन से अपना मुँह ढँकते हुए हल्के से हँसी.

"आपका क्या मतलब?" योहेई ने पूछा. "क्या वो सफेद बिल्ली आपकी नहीं है? जैसे ही मैंने अपने सिलाई क्लास को छोड़ा, उसने मुझे देखकर म्याऊ किया. फिर कुछ कदम चलने के बाद, बिल्ली ने मुड़कर अपना पंजा लहराया जैसे कि वो कह रही हो. 'मेरे साथ चलो.' वो इतनी प्यारी लगी तभी मैंने उसका पीछा किया."

योहेई दंग रह गया. उसने उसे बताया कि कैसे बिल्ली पहली बार उससे मिलने आई थी. "कितनी गज़ब की बिल्ली है!" युवती ने मुस्कुराते हुए कहा. "तो वो मुझे तुम्हारी मछलियां खरीदने के लिए यहाँ बुलाकर लाई होगी!" फिर युवती ने तीन मछलियाँ खरीदीं. योहेई ने झुककर उसे धन्यवाद दिया.

उसके तुरंत बाद, योहेई ने अपने दरवाजे पर एक और दस्तक सुनी. जब उसने दरवाज़ा खोला तो उसने बाहर एक बूढ़े व्यक्ति को देखा, जिसकी पास के शहर में एक बड़ी दुकान थी.

"नमस्कार, सर. आज आप यहाँ कैसे आए?" योहेई ने पूछा. एक अमीर व्यापारी को अपने छोटे घर में आते देखकर योहेई को आश्चर्य हुआ. "तो, यह तुम्हारी बिल्ली थी!" व्यापारी ने अपनी आँखें चौड़ी करते हुए कहा. "तुम्हारी बिल्ली ने मुझे मछलियों के बारे में बात करते हुए सुना होगा."

"मछलियों के बारे में?" योहेई ने पूछा.
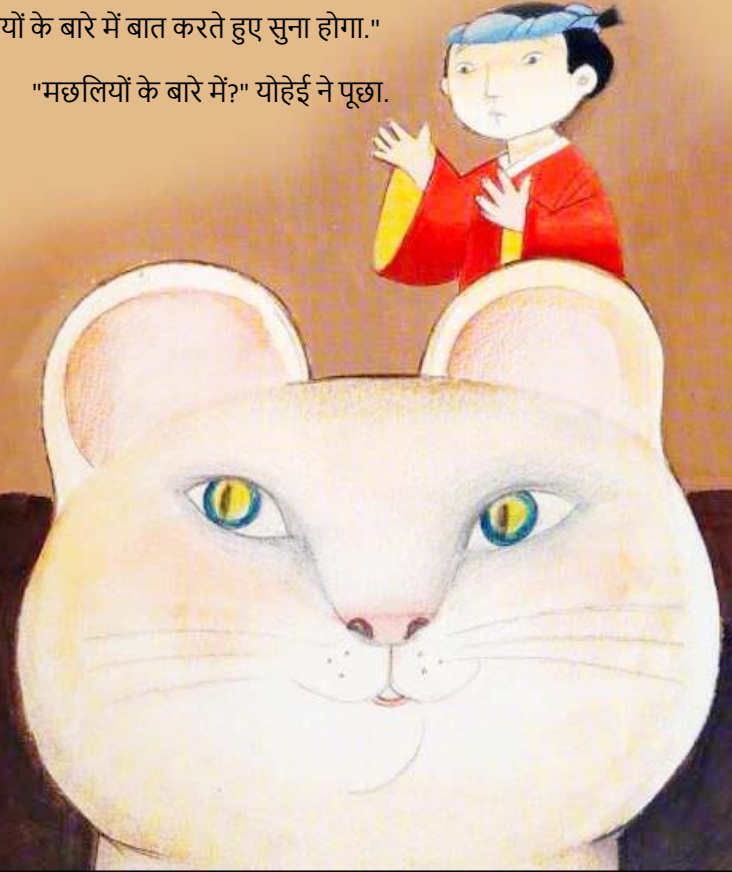
"आज सुबह, मेरी बहू ने एक लड़के को जन्म दिया. मुझे अपने पोते के सम्मान में एक पार्टी के लिए दस बड़े लाल स्नैपर (विशेष मछलियां) चाहिए थीं. जैसे ही मैं मछलियों की तलाश में घर से निकला, तुम्हारी सफेद बिल्ली ने मेरे पास आकर म्याऊ कहा और फिर अपने पंजों से मुझे इशारा किया." फिर व्यापारी ने बिल्ली की नकल करते हुए अपना हाथ हिलाया. "फिर मुझे उस बिल्ली का पीछा करना ही पड़ा. और यहाँ तुम्हारे पास वो विशेष मछलियां उपलब्ध हैं!"

योहेई इतना चकित हुआ कि उसने व्यापारी को अपने पिता के बारे में बताया और फिर बिल्ली उसके घर कैसे आई वो पूरी कहानी सुनाई.
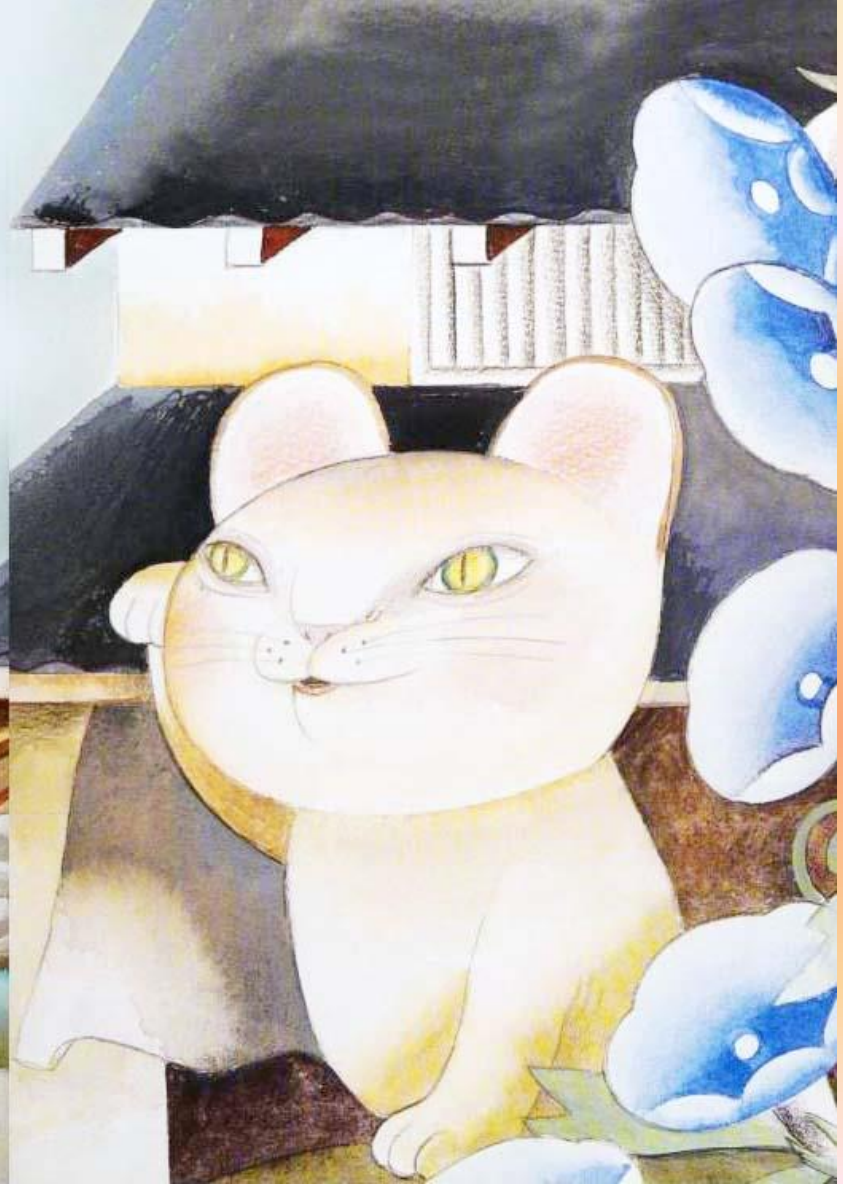
"हे भगवान! वह आपके लिए ग्राहकों को खोज-खोज कर ला रही है!" व्यापारी ने कहा. "मैंने कभी किसी बिल्ली को इस तरह से दयालुता का बदला चुकाते हुए नहीं सुना है. इन दिनों, तो लोग तक आभार व्यक्त करना भूल जाते हैं." फिर व्यापारी ने एक चांदी का सिक्का निकाला, जो मछलियों का एक पूरा ड्रम खरीदने के लिए पर्याप्त था, और उसने उसे योहेई को दिया. "यह मछलियों के लिए पैसे हैं. चिल्लर पैसे अपने पास रखना और उनसे अपने पिता की देखभाल करना.“ योहेई ने व्यापारी को बार-बार प्रणाम किया.

बिल्ली द्वारा आमंत्रित एक के बाद एक करके लोग, योहेई के घर आए. दोपहर तक योहेई के दोनों ड्रम मछलियां बिक गईं. ग्राहकों ने उसकी बिल्ली की प्रशंसा की और अगले दिन वापस आने का वादा भी किया. इस तरह योहेई अपने पिता की देखभाल करते हुए अपनी मछलियां बेचने में सक्षम रहा.
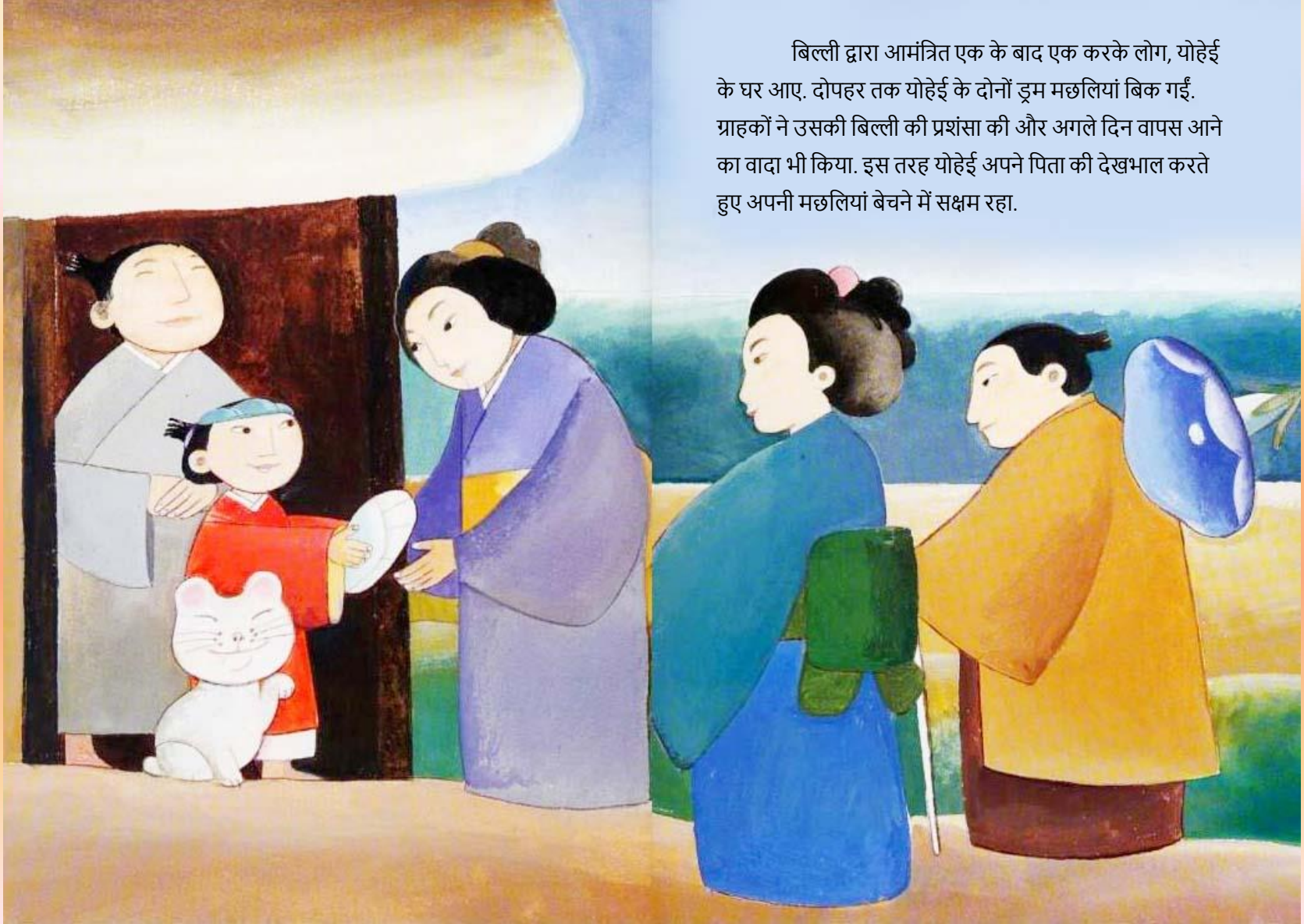
उस दिन से सफेद बिल्ली योहेई के साथ रहने लगी और ग्राहकों को बुला-बुला कर लाने लगी. दूर-दूर से लोग बिल्ली को बुलाने पर योहेई के घर आने लगे. योहेई अधिक-से-अधिक मछलियाँ बेच पाया, और जल्द ही वो अपनी खुद की दुकान खोल पाया. धीरे-धीरे दवाओं से योहेई के पिता की तबियत बेहतर हुई. उसके बाद अन्य सभी व्यापारी भी योहेई की तरह ही एक चतुर बिल्ली की दिली इच्छा करने लगे.

और इस तरह जापान में बिल्ली सौभाग्य का प्रतीक बन गई. लोगों ने योहेई की बिल्ली की तरह एक पंजा पकड़े हुए चीनी-मिट्टी की बिल्लियों बनानी शुरू कर दीं. नए ग्राहकों को लाने और पुराने ग्राहकों का स्वागत करने की उम्मीद में सभी व्यापारी उन चीनी-मिट्टी की बिल्लियों कोअपने स्टोर में रखने लगे.
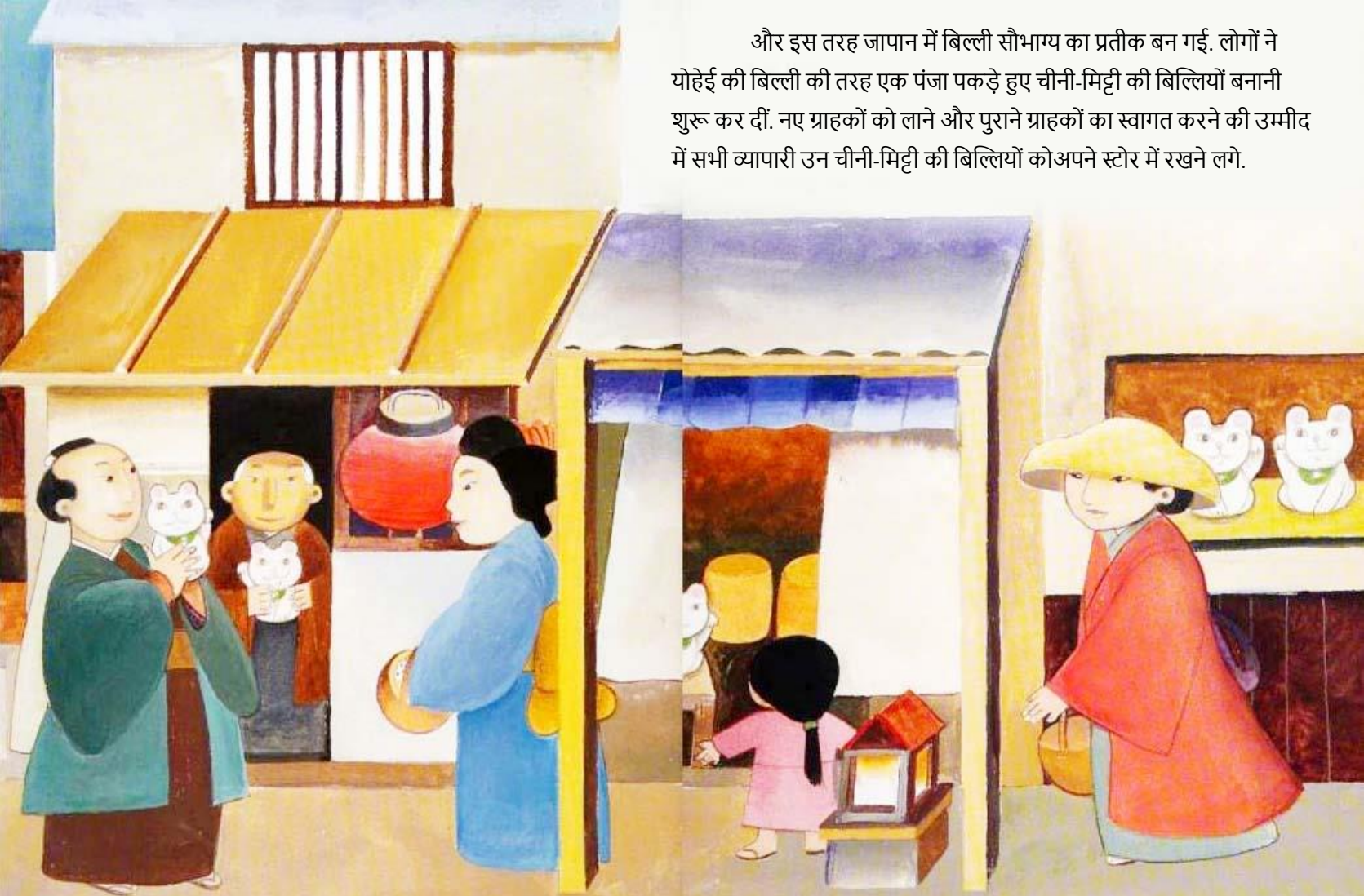
इसलिए अगली बार जब कभी आप जापान जाएं, या फिर अमेरिका में किसी एशियाई रेस्तरां में जाएं, तो शायद आप काउंटर पर रखी चीनी-मिट्टी की बिल्ली को देखें. अगर वो वहां होगी, तो आपको पता चल जाएगा कि वो वहां क्यों है.

समाप्त